डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय - संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र

Date 03/07/20

कादम्बरी - शुकनासोपदेश - बाणभट्ट

गद्यांश व्याख्या

यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः। अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रं समुद्भूतरजोभ्रान्तिरतिदूरमात्मेच्छया यौवनसमये पुरुषं प्रकृतिः।

सान्वय व्याख्या :- (यौवनारम्भे) युवावस्था के आरम्भ में (शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि बुद्धिः) शास्त्ररूपी जल से धुल जाने के कारण निर्मल बुद्धि भी (कालुष्यमुपयाति) कलुषित हो जाती है। (अनुज्झितधवलतापि) धवलता को छोड़े बिना भी (यूनां दृष्टिः) युवकों की दृष्टि (सरागैव भवति) सराग हो जाती है। (अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रम्) जिसप्रकार वायु का प्रबल झोंका सूखे पत्ते को बहुत दूर उड़ा लेजाता है। उसीप्रकार (यौवनसमये) युवावस्था में (समुद्भूतरजोभ्रान्तिः) ~~~~ रजोगुण द्वारा उत्पन्न भ्रान्तिवाली (प्रकृतिः) प्रकृति भी (पुरुषम्) व्यक्ति को (आत्मेच्छया) स्वेच्छानुसार (अतिदूरम्) दूर खींच ले जाती है।

भावार्थ :- यौवन के आरम्भ में शास्त्ररूपी जल से धुलजाने के कारण निर्मल बनी हुई बुद्धि भी प्रायः कलुषित हो जाती है। धवलता को छोड़े

बिना भी युवकों की दृष्टि रजयुक्त हो जाती है। जैसे आंधड़ सूखे पत्ते को दूर उड़ा ले जाता है, वैसे ही यौवन में मनुष्य की प्रकृति रजोगुण के चक्कर में अनिन्द्य विषयों की ओर खींच ले जाती है।

टिप्पणी- यौवनारम्भे - यौवनस्य आरम्भे (ष० तत्पु०)। शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मला - शास्त्रमेव जलं शास्त्रजलम् (क० धा०) शास्त्रजलेन प्रक्षालनं शास्त्रजलप्रक्षालनम् (तृ० तत्पु०), निर्गतं मलं यस्याः सा निर्मला (बहु०) शास्त्रजलप्रक्षालनेन निर्मला (तृ० तत्पु०)। कालुष्यम् - (कलुषस्य भावः (कलुष + ष्यञ्)। उपयाति - उप + या लट् प्र० पु० ए०। (बहु०)। सरागा - रागेण सह वर्तमाना। दृष्टिः - दृश् + क्तिन्। अपहरति - अप + हृ लट् प्र० पु० ए०। वात्या (स्त्री) वात + य (पाशादिभ्यो यः अष्टा० ४.२.४९) + टाप् आँधी, तूफान, बवंडर। शुष्कपत्रम् - शुष्कं पत्रं (क० धा०)। समुद्भूतरजोभ्रान्तिः - वात्यापक्षे = समुद्भूतानां रजसां धूलीनां भ्रान्तिः यस्यां सा (बहु०)। प्रकृतिपक्षे = समुद्भूतस्य रजसः रजोगुणस्य भ्रान्तिः यस्यां सा (बहु०)। आत्मेच्छया - आत्मनः इच्छा आत्मेच्छा (ष० तत्पु०) तया आत्मेच्छया। यौवनसमये - यौवनस्य समयः यौवनसमयः (ष० तत्पु०) तस्मिन् यौवनसमये। प्रकृतिः - प्र + कृ + क्तिन् प्र० एकवचन। इति।

Scanned with CamScanner